1
Jai Ram Singh.
Deptt of Psychology
Mahila College Daltonganj
Dehri

Field Study Method.

Merits & Demerits of Field Study Method.

क्षेत्र अध्ययन विधि के गुण-दोष →

समाज मनोविज्ञान में क्षेत्र अध्ययन विधि का उपयोग इसके कुछ खास गुणों के कारण किया जाता है जिसमें कुछ मुख्य गुण निम्नलिखित हैं।

1 स्वाभाविकता → क्षेत्र अध्ययन विधि में स्वाभाविकता का गुण पाया जाता है। क्षेत्र अध्ययन स्वाभाविक परिस्थिति में किया जाता है जो पूर्णतः अनियमित होती है इस ढंग की स्वाभाविकता न तो क्षेत्र प्रयोग में पाया जाता है और न ही प्रयोगशाला प्रयोग में।

(2) वास्तविकता → क्षेत्र अध्ययन में वास्तविकता का गुण भी पाया जाता है क्योंकि इसमें किसी भी तरह की कृत्रिमता नहीं होती है तथा साथ ही साथ उसका सम्बन्ध व्यक्ति के वास्तविक जीवन के पहलुओं से होता है।

(3) व्यापक क्षेत्र → प्रयोगशाला प्रयोग एवं क्षेत्र प्रयोग की तुलना में Field Study Method का क्षेत्र या सीमा अधिक व्यापक तथा विस्तृत होता है इसके द्वारा ऐसे विषयों या घटनाओं का अध्ययन भी सम्भव होता है जिनका अध्ययन प्रयोगशाला प्रयोग एवं क्षेत्र प्रयोग में सम्भव नहीं है।

(2)

(4) मानव समस्याओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त → केस अध्ययन विधि द्वारा कुछ खास-खास मानव समस्याओं का विस्तृत एवं से अध्ययन करने में अधिक सुविधा होता है इन समस्याओं में सामाजिक मनोविकार, मद्यपान, एवं विरोध आदि मुख्य है

(5) व्यवहारिक समस्याओं के लिए उपयुक्त → केस अध्ययन व्यवहारिक समस्याओं के समाधान में काफी उपयोगी है ऐसी समस्याएँ, जिनका निकट सम्बन्ध मानव जीवन से होता है उनके समाधान में यह विधि अधिक सहायक है। जातिगत दंगे, दहेज सम्बन्धी अपराध, तलाक, इत्यादि सामाजिक व्यवहारिक समस्याओं के सम्बन्ध में सही सूचनाओं को प्राप्त करने तथा समाधान में यह विधि काफी उपयोगी है।

(6) उच्च वाह्य वैधता → SEARS 1991 ने इस सम्बन्ध में कहा है कि केस अध्ययन में उच्च वाह्य वैधता का गुण पाया जाता है क्योंकि यहाँ परिणाम वास्तव में वास्तविक जीवन परिस्थितियों पर आधारित होते है।

दोष → केस अध्ययन विधि के कमियाँ -

उपरोक्त गुणों के होते हुए भी इस विधि में कुछ मुख्य दोष भी

पाये जाते है जो निम्नलिखित है।

(1) नियंत्रण का अभाव → इस विधि का एक मुख्य दोष नियंत्रण का अभाव होना है। इस विधि में यह निश्चय करना संभव नहीं होता है कि प्राप्त परिणाम वास्तव में किस चर का प्रभाव है। अतः एक साथ अनेक चरों का प्रभाव किसी अध्ययन विषय पर पड़ने की सम्भावना होती है ऐसी स्थिति में यह कहना कठिन हो जाता है कि वास्तव में किस चर का प्रभाव अध्ययन विषय पर पड़ रहा है।

(2) परिशुद्धता का अभाव → क्षेत्र अध्ययन विधि में परिशुद्धता का अभाव पाया जाता है जिसका मुख्य कारण यह है कि इस विधि में जो चर होते है उनका माप सही-सही नहीं हो पाता है क्योंकि क्षेत्र परिस्थिति अधिक जटिल होती है अतः जब चरों का मापन सही सही नहीं हो पाता है तो स्वभावतः उसमें परिशुद्धता की कमी हो जाती है

(3) विश्वसनीयता की कमी → क्षेत्र अध्ययन विधि में विश्वसनीयता की भी कमी पायी जाती है। अतः इसके द्वारा जो भिन्न-भिन्न समयों में परिणाम प्राप्त होता है उसके स्थिरता एवं संगति (Consistency) में काफी कमी पायी जाती है -

(4) व्यावहारिक कठिनाइयाँ → क्षेत्र अध्ययन विधि में

(4)

उन अवांछित स्वतन्त्र चरों को रोकते हैं ऐसे अध्ययनों में समय अधिक लगता है तथा खर्च भी अधिक पड़ता है, साथ ही साथ क्षेत्र अध्ययन में प्रयोज्यों से सहयोग भी आसानी से नहीं मिल पाता है जिसका कारण यह है कि इसकी अध्ययन अवधि लम्बे समय तक चलता है

(5) <u>परिचालन का अभाव</u> → क्षेत्र अध्ययन में परिचालन सम्भव नहीं होता है क्योंकि अध्ययन परिस्थिति में नियंत्रण का इसमें अभाव रहता है अतः किसी स्वतंत्र चर को परिचालित करना तथा उसके प्रभाव को निर्धारित करना संभव नहीं हो पाता है।

Field Study Method के वर्णित उपरोक्त गुणों एवं दोषों के आधार के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस विधि के कुछ खास गुण हैं लेकिन दोष भी हैं फिर भी इस विधि का उपयोग सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए काफी व्यापक पैमाने पर किया जाता है।